अंक 39

वर्ष-10वां

जुलाई-सितंबर 2016

चहकती चेतना

प्रकाशन का गौरवमयी 10वाँ वर्ष

संपादक - विराग शास्त्री, जबलपुर

प्रकाशक - सूरज बेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुंबई

संस्थापक - आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर (म.प्र.)

आध्यात्मिक, तात्विक, धार्मिक एवं नैतिक
बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

JULY - SEPT. 2015

प्रकाशक
श्रीमति सूरजबेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुम्बई
संस्थापक
आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाऊन्डेशन, जबलपुर म.प्र.
संपादक
विराग शास्त्री, जबलपुर
प्रबंध संपादक
स्वस्ति विराग जैन, जबलपुर
डिजाइन/ ग्राफिक्स
गुरुदेव ग्राफिक्स, जबलपुर
परमशिरोमणि संरक्षक
श्रीमती स्नेहलता धर्मपत्नि जैन बहादुर जैन, कानपुर
परमसंरक्षक
श्री अनंतराय ए.सेठ, मुम्बई
श्री प्रेमचंदजी बजाज, कोटा
श्रीमती आरती जैन, कानपुर
संरक्षक
श्री आलोक जैन, कानपुर
श्री सुनीलभाई. जे. शाह, भायंदर, मुम्बई
मुद्रण व्यवस्था
स्वस्ति कम्प्यूटर्स, जबलपुर
प्रकाशकीय व संपादकीय कार्यालय
"चहकती चेतना"
सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम,
फूटाताल, लाल स्कूल के पास, जबलपुर म.प्र. 482002
9300642434, 09373294684
chehaktichetna@yahoo.com

क्र.	विषय	पेज
1.	संपादकीय	1-2
2.	क्या रावण राक्षस था	3-4
3.	वे कौन से मुनिराज.....	5
4.	जैनों का योगदान.....	6
5.	वे कौन थी	7
6.	कैसे बना हस्तिनापुर का बड़ा मंदिर	8
7.	प्रसंग - चोरी	9
8.	टायलेट के पानी से	10
9.	छोटी सी भूल.....	11
10.	चाँदी का वर्क.....	12
11.	मूहबद्री	13
12.	ऐसे भी होते थे.....	14
13.	मिलावट	15-18
14.	कविता - बरसात	19
15.	चहकती चेतना को दस वर्ष..	20
16.	परिणामों का फल	21-22
17.	वीर बालिका	23
18.	दिगम्बर-श्वेताम्बर.....	24
19.	फायदा	25
20.	प्रसंग - पापों का फल.....	26
21.	अहिंसा का महान घोषणायें	27
22.	बनारसीदास.....	28
23.	टोडरमल	29
24.	मेरी भावना	30
25.	समझ / सहयोग	31
26.	दिया	32

सदस्यता शुल्क - 400 रू. (तीन वर्ष हेतु)
1200 रू. (दस वर्ष हेतु)

चहकती चेतना के पूर्व प्रकाशित संपूर्ण अंक प्राप्त करने के लिये लॉग ऑन करें

www.vitragvani.com

सदस्यता राशि अथवा सहयोग राशि आप "चहकती चेतना" के नाम से ड्राफ्ट/चैक/मनीआर्डर से भेज सकते हैं। आप यह राशि कोर बैंकिंग से "चहकती चेतना" के बचत खाते में जमा करके हमें सूचित सकते हैं।
पंजाब नेशनल बैंक, फुहारा चौक, जबलपुर
बचत खाता क्र.- 1937000101030106
IFS CODE : PUBN0193700

समाज के गिरते नैतिक वातावरण में क्या हमारी भी कोई जिम्मेदारी है ...?

प्यारे साधर्मियो जय जिनेन्द्र।

एक ओर देश में साधुओं, विद्वानों और मंदिरों की संख्या बढ़ती जा रही है, हर दिन नये मंदिर बन रहे हैं, गली-गली विधान, पंचकल्याणकों, आध्यात्मिक शिविरों की गूंज सुनाई दे रही है वहीं दूसरी ओर व्यक्ति का चित्त पद, पैसा, प्रतिष्ठा, प्रदर्शन के लिये पागल हुआ जा रहा है। इसके लिये न्याय-अन्याय, नीति-अनीति, मर्यादायें जैसी चीजें मात्र पुस्तकों में रह गईं हैं।

संवेदनशीलता और धैर्य जैसी चीजें इतिहास बन रहीं हैं। आज बच्चे मोबाइल के गीत, गेम के साथ दूध पीते हैं। टीवी पर जो कार्यक्रम अपराधों से जागरुक करने के लिये दिखाये जाते हैं उन्हें ही देखकर अपराध के नये तरीके खोजे जा रहे हैं। हत्या और आत्महत्या जैसी जघन्य चीज खेल हो गया है। भोपाल में 12 वर्ष को एक बच्चे को उसकी माँ ने मोबाइल पर गेम खेलने से मना किया तो उसने फांसी लगाकर जान दे दी।

मोबाइल पर सेल्फी का भूत हर दिन कई जान ले रहा है। कानपुर के गंगा बैराज में पिकनिक मनाने गये 7 युवा लड़के सेल्फी के चक्कर में पानी में बह गये। जोधपुर के कॉलेज की छात्रा जयपुर में सेल्फी के 12 मंजिल बिल्डिंग से नीचे गिरकर मर गई।

कम कपड़े पहनना आज के जमाने का प्रतीक बन गया है। फेस बुक पर दोस्त बढ़ाने का लोभ इतना है कि हर किसी की फ्रेण्ड रिक्वेस्ट कन्फर्म की जा रही है चाहे वह कोई अपराधी क्यों न हो और फिर सभ्य समाज की बेटियों की फोटो पर गन्दे कमेन्ट्स किये जा रहे हैं। जितने लाइक्स मिलें उतना मन खुश।

तथाकथित अनेक धर्मों के साधु भी नरक का भय और स्वर्ग का लोभ दिखाकर लोगों से रुपये लेकर ऐशो आराम की जिन्दगी जी रहे हैं। रिश्वत और टेक्स चोरी करके बचाये रुपयों को दान करके मालायें पहनीं जा रहीं हैं। बड़ा चोर

सज्जन कहला रहा है और छोटे चोरों को गालियाँ मिल रहीं हैं। इन सब भयानक खेल में आत्मा की बातें, देव-शास्त्र-गुरु, संस्कार-सदाचार आदि सब गौण से होते जा रहे हैं। धार्मिक आचरण वाले युवा को पागल समझा जा रहा है।

हम दूसरे परिवारों की घटनाओं को देखकर दुःख व्यक्त करते हैं पर हो सकता है कि वह घटना हमारे परिवार के किसी सदस्य का भविष्य हो।

आज देश में अनैतिकता बढ़ती जा रही है। कर्म या दुर्गति का डर समाप्त हो रहा है। ऐसे हाल में हम सभी को अपनी जिम्मेदारी स्वीकार करना चाहिये।

कम से कम हम अपने परिवार के लिये संकल्प लें कि हम अपने बच्चों को ऐसे संस्कार देने का प्रयास करेंगे जिससे वे भविष्य में देश, समाज और धर्म के विकास के प्रति ईमानदार रहें। इसके लिये हमें अपने घर में सुन्दर वातावरण का निर्माण करना होगा। अपने परिवारों के बुजुर्गों के साथ समय देना होगा, जितना हो सके हमारी भाषा, व्यवहार ऐसा हो जिससे बच्चों को सकारात्मक संदेश मिले। कहीं ऐसा न हो कि धन कमाने और सामाजिक प्रदर्शन के चक्कर में हम अपने परिवार से इतना दूर चलें जायें कि वहाँ से लौटना असंभव हो जाये।

- विराग शास्त्री

जाको राखे आयु कर्म मार सके न कोय

व्हेल मछली के पेट में 3 दिन तक जीवित

लोक में लोग भगवान को बचाने और मारने वाला मानते हैं परन्तु प्राकृतिक व्यवस्था के अनुसार कोई किसी को मार नहीं सकता नहीं और बचा नहीं सकता। इसी बात का एक और उदाहरण सामने आया है।

स्पेन के 56 वर्षीय फिशरमैन लुइगी मार्केज समुद्र किनारे गये थे, अचानक आये तूफान में वे समुद्र में बह गये। समुद्र में उन्हें व्हेल मछली ने निगल लिया। इस बीच उन्हें पुलिस ने बहुत तलाश किया पर वे नहीं मिले और पुलिस ने मरा हुआ घोषित कर दिया। तीन दिन के बाद व्हेल ने उन्हें उगल दिया और वे तैरकर समुद्र से बाहर निकले और अपने घर वापस आ गये। उन्हें जीवित देखकर परिवार वालों को आश्चर्य भी और खुशी भी। लुइगी ने बताया कि मैं व्हेल के पेट में था और उसके पेट में बहुत अंधेरा था। लेकिन वाटरप्रूफ घड़ी की लाइट से वे कुछ देख सकते थे।

देखा ना..... कर्म उदय का कमाल।

क्या रावण राक्षस था.....

रामायण के प्रमुख पात्र रावण को सभी लोग राक्षस मानते हैं। अच्छे कार्य करने वाले को राम और बुरे कार्य करने वाले रावण की उपमा दी जाती है। टीवी पर रावण को बुरी तरह हंसते हुये और क्रूर दिखाया जाता है। परन्तु क्या रावण सच में राक्षस था.....यदि नहीं तो उसे फिर राक्षस क्यों कहा जाता है ?

जैन रामायण के अनुसार रावण के पूर्वजों को राक्षस जाति के एक देव ने सहयोग प्रदान किया था और साथ में एक नौ मणियों वाला हार प्रदान किया था। देव की सहयोग की भावना देखकर रावण के पूर्वजों ने अपने वंश का नाम राक्षस वंश रखा था और उसी वंश में रावण का जन्म हुआ। रावण बहुत विद्वान, संयमी और स्वाध्यायी व्यक्ति था। वह प्रतिदिन अत्यंत भक्ति भाव जिनेन्द्र भगवान के दर्शन-पूजन किया करता था।

क्या रावण के दस मुख थे - हिन्दू रामायण के अनुसार रावण के दस मुख थे इसलिये उसे दशानन भी कहा जाता है। इसीलिये टीवी के रामायण सीरियल में भी दस मुख वाला रावण दिखाया जाता है।

सच यह है कि रावण के पूर्वजों को देव ने नौ मणियों वाला हार दिया था। एक बार रावण बचपन में घुटनों के बल चलते हुये हार के पास पहुँच गया और उस हार को देखने लगा। रावण के परिवार के लोगों ने देखा कि उस हार की नौ मणियों में रावण के नौ चेहरे दिख रहे हैं तो उसका नाम दशानन रख दिया। लेकिन रावण का एक ही मुख था, दस नहीं।

क्या हनुमान बन्दर थे - हिन्दू रामायण के अनुसार हनुमान को बन्दर के रूप में दिखाया जाता है। तो क्या हनुमान सच में बन्दर थे...नहीं हनुमान बन्दर नहीं बल्कि अत्यंत सुन्दर रूप वाले कामदेव थे। उनके समान सुन्दर पुरुष दुनिया में कोई नहीं था। वे वानर वंश में पैदा हुये थे इसलिये उन्हें बन्दर कहा जाता है। आप स्वयं विचार करें ...

हनुमान, सुग्रीव, बलि, नल-नील के परिवार की स्त्रियाँ सामान्य चेहरे वालीं हैं और पुरुष बन्दर के मुंह वाली। यदि पुरुष बन्दर के चेहरे वाले हैं तो स्त्रियाँ भी बन्दर के समान होनी चाहिये। है ना सोचने वाली बात...

हनुमान को बजरंगबली क्यों कहा जाता है - जब हनुमान 6 माह के थे तब अपनी माँ अंजना और अंजना के मामा प्रतिसूर्य के साथ विमान में बैठकर हनुरुह द्वीप जा रहे थे। अचानक विमान से हनुमान नीचे गिर गये और जिस चट्टान पर गिरे और चट्टान टूटकर चकनाचूर हो गई लेकिन हनुमान को थोड़ी सी भी चोट नहीं आई। माँ अंजना घबरा गई जब उसने नीचे आकर देखा तो आश्चर्यचकित रह गई क्योंकि हनुमान मुस्कराते हुये खेल रहे थे। तब राजा प्रतिसूर्य ने उनका नाम श्रीशैल रखा और लोग उन्हें बजरंग बली कहने लगे।

हनुमान का शरीर वज्रवृषभ नाराच संहनन का था अर्थात् उनके शरीर की हड्डियाँ लोहे से अधिक मजबूत थीं। ऐसे जीव किसी दुर्घटना में नहीं मरते, वे नियम से मोक्ष जाते हैं। हनुमान ने पूर्व भव में दिगम्बर मुनिराजों की बहुत सेवा की थी जिसके कारण उन्हें ऐसा शरीर मिला था।

हनुमानजी मांगीतुंगी से मोक्ष गये। अब तो आप उन्हें बन्दर नहीं मानेंगे ना.....।

- श्रीमति स्वस्ति विराग जैन, जबलपुर

सद्विचार

- पुण्य उदय में साधन व्यक्ति के पीछे भागते हैं और पाप उदय में व्यक्ति साधनों के पीछे भागता है।
- पर्याय की प्रीत, दुःख का संगीत।
- जीवन का लक्ष्य बनाइये, बिना लक्ष्य का व्यक्ति करता तो बहुत है पर पाता कुछ भी नहीं। घड़ी का पेण्डलूम हिलता-डुलता तो बहुत है पर पहुँचता कहीं नहीं।

चहकती चेतना

वे कौन से मुनिराज थे?

1. वे कौन से मुनिराज थे जिनने खिलजी बादशाह अलाउद्दीन से सम्मान प्राप्त किया था ?

उत्तर - श्री महावसेन (महासेन)

2. वे कौन से मुनिराज थे जो सिकन्दर के साथ यूनान जाने वाले कल्याण मुनि के गुरु थे ?

उत्तर - आचार्य दौलामस ।

3. वे कौन से मुनिराज थे जिन्होंने आचार्य समन्तभद्र स्वामी को "सरस्वती की स्वछन्द विहार भूमि" कहा ?

उत्तर - श्री वादीभसिंह सूरि।

4. वे कौन से मुनिराज थे जो श्रावस्ती से मोक्ष पधारे ?

उत्तर - श्री मृगध्वज मुनि और श्री नागसेन मुनि।

5. वे कौन से मुनिराज थे जो 5000 मुनियों के साथ सोनागिर से मोक्ष पधारे ?

उत्तर - श्री सुवर्णभद्र मुनिराज ।

6. वे कौन से मुनिराज थे जिन्हें 12 वर्ष तक णमोकार मन्त्र याद नहीं हुआ ?

उत्तर - श्री शिवभूति मुनिराज।

7. वे कौन से मुनिराज थे जिन्होंने सियार को उपदेश दिया था ?

उत्तर - श्री सागरसेन मुनिराज।

8. वे कौन से मुनिराज थे जिनसे प्रसिद्ध मंत्री चाणक्य ने दीक्षा ली ?

उत्तर - श्री महीधर मुनिराज।

9. वे कौन से मुनिराज थे जिनके पैर धोने से लोहे का पात्र भी सोने का हो जाता था ?

उत्तर - आचार्य पूज्यपाद।

10. वे कौन से मुनिराज थे जिनकी भक्ति में एक श्रेष्ठी ने अपने 100 पान के वृक्षों वाला खेत जिनमंदिर को दान दे दिया था ?

उत्तर - श्री कनकसेन मुनिराज। (नवमी सदी में)

11. वे कौन से मुनिराज थे जिनसे पूर्व भव सुनकर श्रीपाल को वैराग्य हो गया था?

उत्तर - श्री श्रुतसागर मुनिराज।

भारत के आजादी आन्दोलन में
जैनों का योगदान

भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन में जैनों ने भी बहुत योगदान दिया था। स्वाधीनता संग्राम में 20 जैन शहीद भी हुये थे। लगभग 5000 जैनों ने जेल में अंग्रेजों की भयंकर यातनायें भोगी। 50 महिलायें भी जेल गईं। आजादी के अभियान में हजारों जैन साधर्मियों ने आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग किया।

1. बादशाह बहादुरशाह जफर के मित्र थे लाला हुकुमचन्द जैन। अंग्रेजों के विरुद्ध पत्र लिखने के कारण इन्हें फांसी का दण्ड दिया गया।

2. ग्वालियर के सिन्धिया परिवार के कोष संभालने वाले जैन साधर्मी थे श्री अमरचन्द बांढ़िया । महारानी लक्ष्मीबाई को सहयोग देने के कारण इन्हें ग्वालियर के सर्राफा बाजार के नीम के पेड़ पर 22 जून 1858 को फांसी पर लटका दिया गया। इनका शव तीन दिन तक पेड़ पर लटका रहा।

3. जेल से मित्रों के नाम खून से मराठी में पत्र लिखने के कारण सोलापुर के मोतीचन्द शाह को मार्च 1915 में फांसी पर लटका दिया गया था। इन्होंने अपनी अंतिम इच्छा के रूप में जिनेन्द्र भगवान के दर्शन करने की इच्छा प्रगट की थी।

अन्य जैन शहीद - 4. सिंघई प्रेमचन्द जैन, दमोह 5. साताप्पा टोपण्णावर, 6.कइवी शिवापुर, बेलगाम 7. उदयचन्द जैन मण्डला म.प्र., 8. साबूलाल वैशाखिया, गढ़ाकोटा म.प्र. 9. कु. जयावती संघवी, अहमदाबाद 10. नाथालाल शाह, अहमदाबाद 11. अण्णा पत्रावले, सांगली महा. 12. मगनलाल ओसवाल, इन्दौर 13. भूपाल अणस्कुरे, ठिकपुर्ली कोल्हापुर, 14. कन्धीलाल जैन, सिलोड़ी जबलपुर 15. मुलायमचन्द जैन, जबलपुर 16. चौ. भैयालाल जैन, दमोह 17. चौथमल भण्डारी उज्जैन 18. भूपाल पण्डित हैदराबाद19. भारमल जैन कोल्हापुर 20. हरिश्चन्द्र दगडोवा, परभणी महा.

वे कौन थीं

1. वे कौन थीं जिन्हें दो-दो बार वनवास के दुःख भोगना पड़े ?

उत्तर - सती सीता ।

2. वे कौन थीं जिन्होंने कहा था कि मुझे उद्दायन राजा के सिवा सभी पुरुष पिता के समान हैं?

उत्तर - प्रभावती ।

3. वह कौन थी जिसके प्रेम में चारुदत्त सेठ ने 16 करोड़ स्वर्ण मुद्रायें बरबाद कर दीं थीं ?

उत्तर - बसन्तसेना ।

4. वे कौन थीं जिन्होंने 62 वर्ष तक तप किया ?

उत्तर - आर्यिका सीता ।

5. वे कौन थीं जिनका दूसरा नाम मैना सुन्दरी था ?

उत्तर - मदनसुन्दरी ।

6. वे कौन थीं जिनके पुण्य प्रताप से सूखे तालाब में पानी आ गया था ?

उत्तर - अग्निला।

7. वे कौन जिन्होंने पति के विदेश जाते ही श्वेत वस्त्र धारण किये थे ?

उत्तर - मैना सुन्दरी ।

8. वे कौन थीं जिन्होंने अपने विदेश जाते अपने पति से कहा कि दूसरी स्त्री को माता-बहिन मानना ?

उत्तर - सती मनोरमा।

9. वे कौन थीं जिन्होंने तोते का मरते देखकर णमोकार मन्त्र सुनाया था ?

उत्तर - रत्नमाला ।

10. वे कौन थीं जिन्हें गजकुमार के तीन कल्याणक सुनकर वैराग्य हो गया था ?

उत्तर - शिवादेवी।

हमारे महापुरुष -

कैसे बना हस्तिनापुर का बड़ा जिनमंदिर

सन् 1770 के समय दिल्ली के मुगल बादशाह शाह आलम द्वितीय के समय राजा हरसुखराय शाही खंजाची और बादशाह के जौहरी पद पर थे। हरसुखरायजी राजा तो नाम के थे पर बड़े श्रेष्ठी थे। वे बड़े धर्मात्मा, सज्जन, जिनमंदिर निर्माता, उदार, साधर्मियों के सहायक थे। उनका बहुत सन्मान था। उनके पूर्वज साह दीपचन्द हिसार नगर के सेठ थे। बादशाह शाहजहाँ ने उन्हें दिल्ली में पाँच बीघा जगह दी जिस पर उन्होंने अपने सोलह पुत्रों के लिये अलग-अलग हवेलियाँ बनवाईं थीं। श्रेष्ठी हरसुखराय ने 1807 में दिल्ली के धर्मपुरा में जिनमंदिर बनवाया जो कि सात वर्ष में बनकर तैयार हुआ। जिसकी लागत उस समय 8 लाख आई थी। मंदिर का 99 प्रतिशत कार्य पूरा करके समाज से चन्दा एकत्रित किया और 1 प्रतिशत बचा कार्य पूरा कराके जिनमंदिर समाज को सौंप दिया।

उसी समय भगवान शांतिनाथ के चार कल्याणक की भूमि हस्तिनापुर जंगल था। चारों ओर गूजर आदि जातियों के लोग रहते थे। यहाँ लूटपाट की बहुत घटनायें होतीं थीं। उन्हें जैन धर्म या जैनी लोगों से कोई सहानुभूति नहीं थी। उस समय हस्तिनापुर के गूजर राजा नैनसिंह के बुरे समय में सेठ हरसुखराय ने 1 लाख रुपये कर्ज के रूप में दिये थे। कुछ वर्ष बाद राजा नैनसिंह वह राशि लौटाने आया तो सेठजी ने लेने से मना कर दिया और कहा यदि आप मेरे ऋण से मुक्त होना चाहते हैं तो हस्तिनापुर में विशाल जिनमंदिर का निर्माण करायें। राजा नैनसिंह ने यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और जैन मंदिर का निर्माण कराया। जिनमंदिर पूरा होने पर सेठ हरसुखरायजी ने वहाँ बहुत बड़ा मेला किया और थोड़ा सा चन्दा एकत्रित जिनमंदिर समाज को दे दिया।

ऐसे लोग इतिहास में विरले ही मिलते हैं जिनकी दानवीरता इतनी निस्पृह हो।

सद्विचार

- जिन्दगी की कीमत जीने में है दिन बिताने में नहीं। जीना मात्र जिनवाणी के सिद्धान्तों को समझकर आ सकता है।
- वाणी में भी अजीब शक्ति होती है, कड़वा बोलने वाले की मिठाई भी नहीं बिकती और मीठा बोलने वाले की मिर्ची भी बिक जाती है।

चोरी

एक बार पण्डित गोपालदासजी बरैया की पत्नी ने पाठशाला में काम करने वाले बढ़ई से पाठशाला की लकड़ी से ही अपने बच्चे के लिये खिलौना बनवा लिया। जब पण्डितजी को यह बात मालूम हुई तो उन्होंने लकड़ी और बढ़ई की मजदूरी की राशि पाठशाला में जमा करवा दी। एक सेठ ने उनसे कहा - पण्डितजी ! आप इतनी मामूली सी बात के बारे में इतना क्यों सोचते हैं तो पण्डितजी ने उत्तर दिया - जो तिल की चोरी कर सकता है वह हीरे की भी चोरी कर सकता है और मैं ऐसा पाप नहीं कर सकता।

ऐसे थे पण्डित गोपालदासजी बरैया।

जैसा राजा वैसी प्रजा

एक राजा यात्रा के लिये निकला। भोजन की सामग्री साथ में ही थी। राजा का दल एक जगह विश्राम करने के लिये रुका और वहाँ भोजन बनाने की व्यवस्था होने लगी। भोजन बनाने वाले कर्मचारी ने देखा कि भोजन सामग्री में नमक नहीं है। यह बात राजा तक पहुँच गई तो राजा ने कहा - पास के गांव से नमक ले आओ, पर ध्यान रखना, नमक रुपये देकर लाना, मुफ्त नहीं। वरना सारा राज्य नष्ट हो जायेगा।

रसोईये ने डरते हुये पूछा - थोड़ा सा नमक मुफ्त लाने से राज्य नष्ट कैसे हो जायेगा ?

राजा ने कहा - मैं मुफ्त का नमक लेता हूँ यदि ये बात राजकर्मचारियों को पता चल गई तो वे सोने-चांदी को लेने में संकोच नहीं करेंगे, इस तरह राज्य में रिश्वत की परम्परा प्रारम्भ हो जायेगी और पूरे राज्य में व्यवस्था बेईमान हो जायेगी।

जैसा राजा - वैसी प्रजा।

टॉयलेट के पानी से बन रहा टमाटो सूप

हम इस पत्रिका के माध्यम से बाजार में मिलने वाले अशुद्ध पदार्थों के बारे में आपको सावधान करते रहे हैं। एक समाचार के अनुसार एर्नाकुलम-कोलकाता दूरंतो एक्सप्रेस में सफर करने वाले एक यात्री ने कोझीकोड रेल्वे स्टेशन से रेलमंत्री को शिकायत की है कि दूरंतो एक्सप्रेस में टमाटो सूप में टॉयलेट का पानी मिलाया जा रहा है।

अभी मुम्बई महानगर पालिका ने टमाटो सूप, गोलगप्पे बनने के स्थानों पर अचानक जाँच की तो अधिकारी देखकर दंग रहे गये कि टमाटो सूप बहुत गन्दे स्थान पर बनाया जा रहा था। चारों और सड़े टमाटर और आलू की बुरी गन्ध आ रही थी। गोलगप्पे बनाने के स्थान पर हजारों मक्खियाँ थीं और गोलगप्पे के आटे को पैरों से गूंथा जा रहा था। इसका वीडियो हमारे पास उपलब्ध है जिसे देखकर आप भी हैरान रह जायेंगे और इन्हें खाने की बात तो दूर देखना भी पसन्द नहीं करेंगे।

आपके टूथपेस्ट में नमक नहीं, हड्डी है.....

किसी भी टूथपेस्ट के विज्ञापन से लगता है कि इसके इस्तेमाल से हमारे दांत सफेद हो जायेंगे और मुंह की बदबू चली जायेगी। बड़ी-बड़ी कम्पनियाँ वर्षों से यह विज्ञापन करके लोगों को मूर्ख बना रहीं हैं।

आपको शायद पता नहीं है कि लगभग सारी कम्पनियाँ अपने टूथपेस्ट में हड्डियों का पाउडर मिलातीं हैं। 5 मार्च 2016 को प्रसिद्ध समाचार पत्र हरिभूमि ने इसकी पूरी रिपोर्ट प्रकाशित की है। कत्लखानों में हर दिन कटने वाले पशुओं के मांस, चर्बी, खून, चमड़ी का प्रयोग अनेक पदार्थों में किया जाता है परन्तु हड्डी का कोई प्रयोग नहीं समझ में आता था। प्राप्त रिपोर्ट के अनुसार उन हड्डियों को एक हड्डी पीसने वाली मशीन से पाउडर बनाकर पेस्ट की कम्पनियों को भेजा जाता है।

निर्णय आपको करना है कि आप अपनी सुबह हड्डी वाले टूथपेस्ट को मुंह में डालकर करना चाहते हैं या शुद्ध सात्विक दन्तमंजन से...।

छोटी सी भूल ले ली चार की जान

कभी-कभी छोटी सी असावधानी भी खतरनाक साबित हो सकती है। अहमदाबाद के पास के एक परिवार की एक महिला बाजार से शाम को सब्जी खरीदकर लाई और उस सब्जी में पालक की भाजी भी थी। उस महिला ने सब्जी को बिना साफ किये फ्रिज में रख दिया। पालक की भाजी में एक सांप छिपकर बैठा था, रात्रि में फ्रिज में ठंडक होने के कारण वह सांप बाहर निकला और नीचे की ट्रे में खुले दूध में गिरकर मर गया। घबराहट में उस सांप का जहर भी दूध में मिल गया।

सुबह होने पर पति किसी काम से घर से बाहर चला गया। महिला के दोनों बच्चे स्कूल जाने के लिये तैयार हो गये। गर्मी का मौसम होने के कारण उन्होंने अपनी माँ से ठंडा दूध मांगा। माँ ने भी दो गिलास दूध निकालकर शक्कर मिलाकर दे दिया।बच्चे दूध पीकर स्कूल चले गये।बाद में एक कप दूध निकालकर उसकी चाय बनाकर पी ली और दूसरे गैस पर दूध गर्म करने रखा। जैसे ही दूध गरम होकर ऊपर आया तो उसे उसमें सांप दिखाई दिया। सांप को देखकर वह घबरा गई और तुरन्त अपने पति को फोन पर यह बात बताई। पति ने तुरन्त अपने फैमिली डॉक्टर के पास पहुँचने को कहा और खुद बच्चों को स्कूल से लेकर डॉक्टर के पास पहुँचने के बात कही। घबराहट में उसकी गाड़ी का एक्सीडेन्ट हो गया और उसकी रास्ते में ही मृत्यु हो गई। दोनों बच्चे स्कूल में मर गये और पत्नी घर में जहर के कारण से मर गई।

ध्यान रखें - बाजार से सब्जी सुबह ही लेकर आयें और सब्जी को लाकर कुछ देर के लिये खुला छोड़ दें जिससे उसके जीव निकल जायें, फिर उसे अच्छी तरह धोकर, साफ करके यथा स्थान रखें।

चांदी का वर्क मांसाहारी -

मेनका गांधी

भारत सरकार की महिला व बाल विकास मंत्री श्रीमति मेनका गांधी ने बताया कि मिठाईयों, सुपारी, इलायची, पान, फलों पर लगाया जाने वाला चांदी का वर्क पशुओं की आंतों में पीटकर बनाया जाता है। गौवंश अर्थात् गाय, बैल आदि को मारकर उसकी आंतें निकालीं जातीं हैं, उसकी एक पुस्तक बनाई जाती है। इसमें चांदी या एल्यूमीनियम के टुकड़े डाले जाते हैं और फिर से उसे हथौड़े से पीटकर पतला किया जाता है। बैल की आंत को पीटते रहने पर भी वह फटती नहीं है इसलिये बैल या गाय की आंतों का प्रयोग किया जाता है। स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारा इसकी पूरी जांच करवाई गई और 19 अप्रेल 2016 को सरकार द्वारा राजपत्र जारी कर चांदी के वर्क में पशुओं के आंत के प्रयोग को बन्द करने की कार्यवाही प्रारम्भ की गई।

आशा है कि जल्द ही देश में मशीनों से वर्क तैयार किया जायेगा।

- श्रीमति मेनका गांधी से
अमर उजाला समाचार पत्र के आधार पर

बदला जमाना

बेटा एडीलेड में, बेटी है न्यूयार्क।
ब्राईट बच्चों के लिये, हुआ बुढ़ापा डार्क।
बेटा डालर में बंधा, सात समन्दर पार।
चिता जलाने बाप की, गये पड़ोसी चार।।
ऑन लाईन पर हो गये, सारे लाड़ दुलार।
दुनियां छोटी हो गई, रिश्ते हैं बीमार।।

अतिशय क्षेत्र मूडबिद्री

कर्नाटक के मंगलौर जिले में मंगलौर से 38 किमी की दूरी पर स्थित अतिशय क्षेत्र मूडबिद्री जैन काशी के नाम से विख्यात है। प्राकृतिक वातावरण के मध्य विराजमान यह क्षेत्र अपने अद्भुत जिनालयों के कारण प्रसिद्ध है। इसका संस्कृत नाम वंशपुर अथवा वेणुपुर भी है। यहाँ पूर्व में जैन साधर्मियों की अधिक संख्या के कारण इस व्रतपुर भी कहा जाता था। यहाँ 18 जिनमंदिर, 18 हिन्दू मंदिर, 18 तालाब थे। पहले यहाँ जंगल था और विशिष्ट गुरुओं के मार्गदर्शन पर यहाँ जिनमंदिर का निर्माण कर सन् 741 में भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा की गई थी। एक बार एक मुनिराज ने यहाँ से विहार करते समय एक आश्चर्यकारी घटना देखी कि गाय और शेर अपना बैर भूलकर एक साथ विचरण कर रहे थे। उन्होंने सोचा - जरूर यहाँ कोई विशेष बात होनी चाहिये। साधर्मियों द्वारा खुदाई करने पर यहां भगवान पार्श्वनाथ की प्राचीन प्रतिमा प्राप्त हुई और यहाँ विशाल जिनमंदिर का निर्माण करवाया गया, जिसे गुरू बसदि के नाम से जाना जाता है। इसी मंदिर में तीन ग्रन्थ - धवला,जयधवला व महाधवला की मूल प्रति सुरक्षित हैं।

अंतिम श्रुतकेवली भद्रबाहु स्वामी अपने प्रमुख शिष्य चन्द्रगुप्त मुनि और 12000 साधुओं के साथ श्रवणबेलगोला आकर रहने लगे तब उनके साथ आये कुछ मुनि मूडबिद्री में भी रुके थे।

बाद में समीप के हेलूबीडू का जैन राजा विष्णुवर्धन जैनधर्म छोड़कर ब्राह्मण बन गया और उसने द्वेष से अनेक जैन मंदिरों को नष्ट कराया, अनेक जैन श्रावकों का जबरदस्ती धर्म परिवर्तन करा दिया। बाद में इसी राज्य में वीर बल्लालराय राजा बना। इस राजा ने अपने पूर्ववर्ती राजाओं के पापों का प्रायश्चित करते हुये जिनमंदिरों का जीर्णोद्धार कराया और मूडबिद्री की पुनः स्थापना कराई।

मूडबिद्री में एक त्रिभुवनतिलक चूड़ामणि मंदिर है। इसमें 1000 खंभे हैं। साथ ही यहाँ स्फटिक मणि की 29 प्रतिमायें हैं और हीरा-पन्ना आदि की 35 प्रतिमायें दर्शनीय हैं।

मूडबिद्री में भोजन और आवास की पर्याप्त सुविधा उपलब्ध है।

मूडबिद्री से श्रवणबेलगोला 238 किमी, कारकल 18 किमी, धर्मस्थल 51 किमी की दूरी पर स्थित हैं।

हमारे महापुरुष -

ऐसे भी होते थे श्रेष्ठी...

राजा हरसुखराय के ही पुत्र थे राजा सुगनचन्द्र। दोनों पिता-पुत्र ने मिलकर उस समय लगभग 70 जिनमंदिर बनवाये थे। हस्तिनापुर के जिनमंदिर का कुछ कार्य हरसुखराय के निधन के बाद राजा सुगनचन्द्रजी ने ही पूरा करवाया था। पिता के निधन के बाद राजा की उपाधि सुगनचन्द्रजी को मिली। इस समय में बादशाही लालकिले के अन्दर ही सीमित रह गई थी। नगर पर अंग्रेजों का शासन हो गया था और सुगनचन्द्रजी शाही खंजाची पद पर थे। अंग्रेज अधिकारी भी राजा सुगनचन्द्रजी का बहुत सन्मान करते थे। जिस धर्मपुरा का मंदिर निर्माण इनके पिताजी ने करवाया था उस जिनमंदिर को मुसलमानों ने हमला करके लूट लिया। तब सुगनचन्द्रजी के प्रभाव से बादशाह ने आदेश देकर लुटेरों को पकड़ कर मंदिर का कीमती सामान वापस दिलाया था। यह धर्मपुरा का मंदिर दिल्ली का पहला शिखर वाला मंदिर है। मुस्लिम शासकों के समय शिखर वाले मंदिर बनाने का निषेध था परन्तु सेठजी ने विशेष शाही अनुमति प्राप्त करके यह मंदिर बनवाया था। इस मंदिर में आज भी तेरापन्थ शुद्ध आम्नाय का पालन होता है।मंदिर में कहीं भी लाइट नहीं लगई गई और सम्पूर्ण मंदिर में प्राकृतिक प्रकाश आता है। शाम को मंदिर नहीं खुलता। इस मंदिर में दीपक जलाने का भी निषेध है।

इसके अलावा दिल्ली में तीन, हिसार, पानीपत, सांगानेर, सोनागिर आदि स्थानों पर भी जिनमंदिर का निर्माण करवाया। अवध के नवाब वाजिद अली शाह ने सेठ सुगनचन्द्रजी को एक विशाल स्वर्ण जड़ित चित्र बनवाकर उन्हें भेंट किया था।

जानलेवा है यह मिलावट

जानिये..... बाजार में

क्या खा रहे हैं आप..

देश में बड़े से बड़े स्टोर से लेकर आपके मोहल्ले की किराना दुकान तक मिलने वाली खाद्य सामग्री मिलावट के साथ मिल रही है। बड़े से बड़े ब्रांड की चीजें जाँच में मिलावट वाली पाईं गईं। इसमें मैगी, नेस्ले, रामदेव की पतंजलि जैसी कम्पनियाँ शामिल हैं। सरकारी संस्था फूड सेपटी स्टेण्डर्ड अथारिटी ऑफ इण्डिया एफ एस एस आई के अनुसार मिलावट तो वर्षों से की जा रही है परन्तु पिछले कुछ वर्षों में मिलावट की मात्रा पिछले वर्ष 13 प्रतिशत थी जो इस वर्ष बढ़कर 20 प्रतिशत हो गई है। जांच के लिये लाये हर पाँच में से एक नमूना फेल हो रहा है। इस वर्ष 49,290 खाद्य वस्तुओं के सेम्पल की जांच की गई जिसमें से 8,469 सेम्पल स्वास्थ्य के लिये हानिकारक पाये गये।

राज्यसभा में 5 मई 2016 को एक रिपोर्ट प्रस्तुत की गई जिसके अनुसार सांसदों ने माना है कि देश में 70 प्रतिशत खाद्य पदार्थ मिलावटी हैं।

धन के लोभ में आज व्यक्ति इतना अंधा हो गया है कि उसे किसी की मौत मजाक लगने लगी है,यहाँ तक कि अभी पंजाब में नकली खून बनाने की फैक्ट्री भी पकड़ी गई। हॉस्पिटल्स में स्वस्थ होने की इच्छा से इलाज कराने वाले व्यक्ति की किडनी निकालीं जा रहीं हैं। हार्ट के डॉक्टर मनमर्जी स्वस्थ व्यक्ति के दो वाल्व खराब है कहकर ऑपरेशन कर रहे हैं। हो सकता है किसी व्यक्ति को गैस बनने के कारण सीने में दर्द हो रहा हो।

ब्लड डोनेशन के केम्प लगाकर खून दान लेकर उसे मंहगे दाम में बेचा जा रहा है। आप भी जानिये मिलावट के खेल को -

चायपत्ती में रंग - मिलाया जा रहा है। मिलावट देखने के लिये थोड़ी सी चाय को ठंडे पानी में डालें। यदि वह रंग छोड़े तो समझिये उसमें रंग मिलाया गया है।

सेब में मोम - सेब पर चमक लाने और उसे अधिक समय तक ताजा बनाये रखने के लोभ में सेब पर मोम की परत और

केमिकल लगाया जा रहा है। इसके लिये सेब की छिलके पर चाकू से हल्के हाथों से खुरचें यदि उस पर मोम निकले तो समझये वह मिलावट वाला है।

मटर - अच्छा और ताजा दिखे इसके लिये उस पर हरा रंग किया जा रहा है। इसमें मेलाक्राइट की मिलावट की जा रही है।

हल्दी - मिर्च बाजार में पैकेट में मिलने वाली पिसी हुई हल्दी में कलर दिखाने के लिये मेटानिल येलो की और पिसी हुई मिर्च में लाल ईंट का पाउडर मिलाया जा रहा है।

काली मिर्च- में पपीते के बीज मिलाये जा रहे हैं।

सरसों-राई - इसमें अर्जीमोन के बीज मिलाये जा रहे हैं। सरसों को दबाकर देखें तो उसमें पीला पदार्थ निकलेगा और अर्जीमोन को दबाकर देखने पर सफेद पदार्थ निकलेगा।

आइसक्रीम - हर वर्ग की प्रिय वस्तु आईसक्रीम में वाशिंग पावडर और सेकरीन की मिलावट हो रही है और आपको जानकर आश्चर्य होगा कि सभी बड़ी कम्पनियों की आइसक्रीम लगभग मांसाहार के समान हैं।

चीनी - बारीम चीनी में चाक पावडर मिलाये जाने की भी शिकायतें सरकारी अधिकारियों को मिलीं हैं।

दूध - पहले दूध में मात्र पानी मिलाया जाता था परन्तु अब इसमें

यूरिया, वाशिंग पाउडर, स्टार्च,कास्टिक सोडा, पेन्ट जैसी चीजें मिलाईं जा रही हैं। कुछ दूध वाले अपनी दूध की केन में घर से पानी भरकर लाते हैं और बाजार से दूध का पैकेट खरीदकर उसमें मिला देते हैं। इससे 1 लीटर दूध में 3 लीटर दूध तैयार हो जाता है।

दही-छाछ-लस्सी - चावल के मुरमुरे को पीसकर पावडर बनाया जाता है, उसमें साइट्रिक एसिड और दूध मिलाकर उसे 24 घंटे के लिये रख दिया जाता है। इतने समय में यह पूरी तरह सड़ जाता है और इस पर दही की तरह एक मोटी परत दिखने लगती है और यह

दही की तरह खट्टा भी हो जाता है। इसकी लस्सी, छाछ, दही बाजार में खुलेआम बिक रहा है।

सोनपपड़ी - नागपुर की सोनपपड़ी पूरे देश में प्रसिद्ध है। इसे आकर्षक बनाने के लिये इस पर पिस्ता के टुकड़े रखे जाते हैं। कई जगह मूंगफली को पिस्ता के रंग करके पिस्ता बनाया जाता है। यह रंग बेहद खतरनाक होता है। इस रंग के लगातार सेवन से कैंसर जैसी खतरनाक बीमारी होतीं हैं। इस वर्ष नागपुर में इस वर्ष 1,938 किलो नकली पिस्ता पकड़ा गया।

सुपारी - जो सुपारी आप पान या गुटखे में खा रहे हैं उसकी अधिकांश सुपारी में अगरबत्ती बनाने वाले बुरादे की मिलावट हो रही है। साथ ही इसमें ए फल छींद की गुठली मिलाई जाती है। नागपुर सुपारी का बड़ा केन्द्र है। इस वर्ष मात्र अप्रेल माह में 90 लाख की मिलावटी जब्त की और पूरे साल में 1 करोड़ 42 लाख की मिलावटी सुपारी पकड़ी गई।

सब्जी - सब्जी को हरा रंग देने और उसे जल्दी बड़ा करने के लिये उसमें मेलेकाइट, पेस्टीफाइड और टॉस्किन मिलाया जा रहा है। यह लीवर, आंत, किडनी को बहुत नुकसान पहुँचा रहा है।

लीची - हरी लीची को बाजार में बेचने के लिये इसमें हरा रंग का स्प्रे किया जाता है।

मावा - बाजार में मिलने वाले की शुद्धता की कोई गारन्टी नहीं है। इसमें आलू, शकरकन्द, वनस्पति डालडा की मिलावट की जा रही है। ऐसे मावा से मिठाई बनाई जातीं हैं। बाजार की मिठाईयों में कलर और सुगन्ध से हमें नकली होने का पता नहीं चलता।

पानीपुरी - इसे गोलगप्पे या फुलकी भी कहा जाता है। पानीपुरी के पानी में इमली के बजाय साइट्रिक एसिड मिलाया जाने लगा। एक रिपोर्ट के अनुसार 10 में से 8 पानीपुरी वाले साइट्रिक एसिड का प्रयोग कर रहे हैं। यह पेट और आंत के लिये खतरनाक है।

नमकीन - बाजार के नमकीन में चना दाल या अरहर की दाल में तेवड़ा मिलाया जा रहा है। तेवड़ा की दाल पर सरकार की ओर प्रतिबन्ध है फिर भी तेवड़ा की बहुत खेती हो रही है और कम कीमत होने के कारण इसे नमकीन में मिलाकर प्रयोग किया जा रहा है।

तेवड़ा का अधिक उपयोग लकवा जैसी बीमारी पैदा कर सकता है या अकड़न या कंपकपी जैसी शिकायतें भी मिल सकतीं हैं।

चावल - चावल में प्लास्टिक और आलू से बने नकली चावलों की मिलावट होने लगी है। हमारे पास इसका वीडियो उपलब्ध है।

ब्रेड - सेन्टर फॉर साइंस इन्वायरमेन्ट सीएसई की रिपोर्ट के अनुसार ब्रेड में ऐसे रसायन मिले हैं जिनसे थायराइड होने की संभावना होती है। ब्रेड, पाव, रेडी टू ईट बर्गर, पिज्जा में भी ऐसे ही रसायन पाये गये।

हमारे पास इनमें से अधिकांश के वीडियो उपलब्ध हैं। हम इन्हें बाल संस्कार शिविरों में दिखाते भी हैं। हमने मिलावट वाले कुछ वस्तुओं का उल्लेख किया है। निष्कर्ष में हम कह सकते हैं कि हमारे जिनागम के चरणानुयोग के अनुसार बाजार में बनी लगभग सभी वस्तुयें अभक्ष्य हैं। हम स्वास्थ्य और पापों से बचने के लिये बाजार में बनी वस्तुओं का त्याग करें और सब्जी-फल, अनाज जैसी वस्तुओं को अच्छी तरह देखकर खरीदें।

सावधानी ही सुरक्षा का सर्वोत्तम उपाय है।

184 वर्ष का कछुआ

सेंट हेलेना आईलैंड पर रहने वाले दुनिया के सबसे बूढ़े कछुये की फोटो आईं हैं। 1882 में सिचेल्स के गर्वनर ने गिफ्ट के रूप में इस जब कछुये को आइलैण्ड पर भेजा था तब इसकी उम्र 50 वर्ष की थी। इस कछुये की लम्बाई 3 फुट 9 इंच है।

कविता

बरसात

(एक दिन बरसात हो रही थी,
नीलू और उसकी सहेलियाँ गा रही थीं)

बादल गरजा, घम घम घम, बरसा पानी, छम छम छम
बिजली चमकी चम चम चम, लगे कांपने हम हम हम
बनता कीचड़ घप घप घप, बच्चे चलते, छप छप छप
नीलू - तुम बैठे क्यों डरते हो ? आनन्द क्यों न करते हो ?
आनन्द करते हम हम हम, फिर क्यों डरते, तुम तुम तुम
पीलू - बरसा पानी आई बाढ़, देखो कितने उखड़े झाड़
कितनी चींटी डूब रही हैं, चिड़िया कैसे कांप रहीं हैं
मेंढ़क मरते, मरते जीव, हम हिंसा से दूर सदैव
हम न खेलें पानी में, शिक्षा दी थी नानी ने।।

जन्म दिवस की मंगल शुभकामनायें

सूरज सम ही कान्ति हो, हो प्रज्ञा का धाम ।
रचित ऐसा कार्य करो, दुनिया करे प्रणाम ।।

रचित कान्ति जैन, दुर्ग 17 जुलाई

नमन पंचपरमेष्ठी को, नमन हो आतमराम।
भव भ्रमण का अंत हो, पाओ शिवपुर धाम।।

नमन प्रीतम शाह, दिल्ली 2 जुलाई

जन्म मरण के अभाव की भावना में ही जन्मदिवस मनाने की सार्थकता है ।

हमें आपको यह सूचित करते हुये अत्यंत प्रसन्नता और गौरव का अनुभव कर रहे हैं कि अगले अंक के साथ चहकती चेतना अपने प्रकाशन के गौरवमयी 10 वर्ष पूरे कर रही है। प्रकाशन की इस गौरवमयी यात्रा में हमें समाज के सभी आयु वर्गों का भरपूर स्नेह प्राप्त हुआ, आपके स्नेह के बल पर ही आपकी यह पत्रिका 10 वर्षों की अनवरत यात्रा पूरी कर रही है। इस मंगलमय अवसर पर संस्था चहकती चेतना का विशेषांक प्रकाशित कर रही है। इस विशेषांक हेतु आपकी रचनायें सादर आमंत्रित हैं। इसके साथ ही चहकती चेतना के सम्बन्ध में आपके मंगल विचार भी आमंत्रित हैं।

आप अपने विचार और लेख हमें टाइप करके अथवा सुन्दर लिखावट में पेपर के एक ओर लिखकर भेजें।

इस विशेषांक हेतु आपका शुभकामना संदेश विज्ञापन के रूप में आमंत्रित हैं।

पूरा पेज	- 5,100/- रु.
आधा पेज	- 2,500/- रु.
एक चौथाई पेज	- 1,100/- रु.

आप अपनी राशि सर्वोदय ज्ञानपीठ, जबलपुर के नाम से डाफ्ट/चैक के रूप में भेज सकते हैं अथवा इसके पंजाब नेशनल बैंक शाखा - फव्वारा चौक, जबलपुर बचत खाता क्रमांक - **1937000100075883** में जमा करके सूचित करें और अपना विज्ञापन अथवा शुभकामना संदेश हमें ईमेल अथवा व्हाट्स एप कर सकते हैं।

परिणामों का फल

भारत में मालवा नाम के क्षेत्र में धार नाम का नगर है। वर्तमान में यह मध्यप्रदेश में है। यह प्राचीन समय से धर्म नगरी के रूप में विख्यात रहा है। यहाँ एक देवल नाम का कुम्हार और धर्मिल नाम का नाई रहते थे। दोनों पक्के दोस्त थे। दोनों नगर के धनी व्यक्ति थे। दोनों ने मिलकर नगर के बाहर एक धर्मशाला बनवाई जहाँ पर किसी भी समाज का व्यक्ति आकर ठहर सकता था।

एक बार नगर में एक दिगम्बर मुनिराज आये। नगर में मुनिराज के योग्य कोई स्थान नहीं मिलने पर देवल ने उन्हें उसी धर्मशाला में ठहरा दिया। दूसरे दिन धर्मिल नाई ने मुनिराज को धर्मशाला में देखा तो उसे बहुत क्रोध आया उसने मुनिराज को बाहर निकालकर दूसरे साधु को वहाँ ठहरा दिया। जब यह बात देवल को पता चली तो उसे धर्मिल पर बहुत क्रोध आया और उससे कहा कि तुमने दिगम्बर मुनिराज का अपमान किया है। इस बात पर दोनों में बहुत झगड़ा और मारपीट होने लगी। झगड़े में दोनों की मृत्यु हो गई। धर्मिल मरकर बाघ और देवल सुअर हुआ। दोनों एक ही जंगल में थे। कुछ समय बाद दो मुनिराज विहार करते हुये उस जंगल में आये और गुफा में ध्यान करने बैठ गये। सुबह जब सुअर ने उन मुनिराजों को देखा तो उसे अपना पूर्व याद आ गया और वह अत्यंत भक्ति भाव मुनिराज के चरणों के पास बैठ गया। मुनिराजों ने उसे योग्य पात्र जानकर अहिंसा का उपदेश दिया। सुअर ने संकल्प लिया कि अब वह अपने भोजन के लिये किसी जीव की

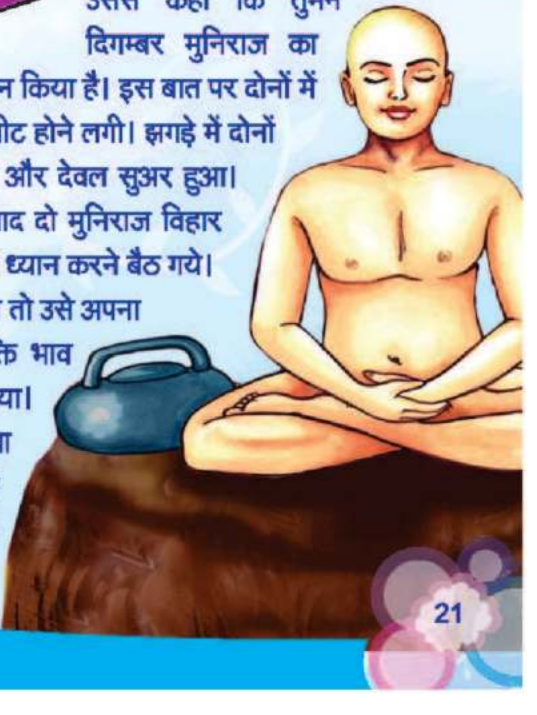

हत्या नहीं करेगा और वह दोनों मुनियों की रक्षा के भाव से वहीं बैठ गया।

तभी वही बाघ जो पहले धर्मिल था वह शिकार की तलाश करते-करते उस गुफा में आया उसने मुनिराजों को देखा और उन्हें खाने के लिये झपटा। इससे पहले सुअर ने बाघ को बीच में ही रोककर उसे गिरा दिया।

दोनों में भीषण लड़ाई होने लगी। सुअर मुनिराजों की रक्षा के भाव से लड़ रहा था और बाघ मुनिराजों को मारने के लिये लड़ रहा था। लड़ते हुये दोनों इतने घायल हो गये कि दोनों की मृत्यु हो गई।

सुअर मुनिराजों को अभयदान देने के कारण सौधर्म स्वर्ग में देव हुआ और बाघ मुनिराजों के प्रति हिंसा के परिणाम के कारण नरक गया।

अपने परिणाम हमेशा अच्छे बनाये रखने का प्रयास करना चाहिये।

चोरी का फल

मम्मी गईं जब मन्दिर, हेमा गुड्डू घर के अन्दर।
हेमा ने आलमारी खोली, गुड्डू से धीरे से बोली।।
मैं कुर्सी पर चढ़ जाती हूँ, लड्डू दो चुरा लाती हूँ।
तुम कुर्सी पकड़े रहना, मम्मी पापा से मत कहना।।
कुर्सी पर बैठी थी बिल्ली, हेमा कुर्सी से उछली।
हेमा बिल्ली गिरे धड़ाम, लड्डू का हो गया काम तमाम।।

- बा. ब्र. सुमतप्रकाशजी जैन

वीर बालिका चम्पा

बड़े-बड़े राजपूत राजाओं ने अकबर के सामने अपनी हार मान ली थी और उनकी आधीनता स्वीकार कर ली थी परन्तु महाराणा प्रताप ही ऐसे थे जो अकबर के आगे नहीं झुके। उन्होंने बहुत कष्ट उठाये परन्तु कभी हिम्मत नहीं हारी। अकबर की सेना ने उनके नगर चित्तौड़ पर अधिकार कर लिया था। महाराणा प्रताप अरावली की पहाड़ियों और जंगलों में अपने परिवार के साथ भटकते फिर रहे थे। उनके साथ उनका परिवार भी था। दिनभर पैदल घूमना, चट्टान पर सोना, कई बार उपवास करना उनका जीवन बन गया था। कई बार उन्हें बेर और घास की रोटियाँ खाना पड़ती थीं। ऐसे संघर्ष उन्होंने कई वर्ष तक सहे।

महाराणा प्रताप की बेटी चम्पा ग्यारह वर्ष की थी और बेटा चार वर्ष का। एक दिन दोनों नदी के पास खेल रहे थे तभी कुमार को भूख लगी और वह रोने लगा। चम्पा ने अपने भाई को कहानी सुनाकर बहला दिया। वह भूखा ही सो गया। चम्पा जब अपने भाई को सुलाकर आई तो अपने पिता महाराणा को चिन्तित देखकर उसका कारण पूछा तो महाराणा ने बताया कि बेटी! हमारे यहाँ एक अतिथि आये हैं और मेरे पास उसे खिलाने के लिये कुछ नहीं है।

चम्पा ने कहा - पिताजी! आप चिन्ता न करें। आपने जो कल मुझे दो रोटी दीं थीं उनमें से एक रोटी रखी है। वह आप अतिथि को दे दीजिये।

कई दिनों से पूरा भोजन न मिलने से बच्चे बहुत कमजोर हो गये थे और चम्पा अचानक बेहोश होकर गिर पड़ी। महाराणा को अपने बच्चों को भूखा देखकर और अपनी परिस्थिति सहन नहीं हुई और उन्होंने उसी दिन बादशाह अकबर को उनकी आधीनता स्वीकार करने के लिये पत्र लिखा।

चम्पा के होश में आते ही महाराणा ने उसे बताया कि बेटी! अब तुम्हें और अधिक दुःख नहीं भोगना पड़ेंगे। मैंने अकबर की आधीनता स्वीकार करने का निर्णय किया है।

चम्पा जोर से बोली - पिताजी! ये आप क्या कर रहे हैं हमें बचाने के लिये क्या आप गुलामी स्वीकार करेंगे ? हमें कभी न कभी तो मरना ही है। पिताजी देश के लोगों का अपमान मत कीजिये। आपको मेरी सौगंध है....। ऐसा बोलते-बोलते चम्पा के प्राण निकल गये। यह देखकर महाराणा ने फिर संघर्ष करने की साहस किया और अपने लोगों को एकत्रित कर अपना राज्य वापस लिया। ऐसी थी चम्पा की देशभक्ति..।

दिगम्बर एवं श्वेताम्बर धर्म की मान्यताओं में अंतर

	श्वेताम्बर	दिगम्बर
1.	केवली भोजन करते हैं	नहीं करते हैं।
2.	केवली को मल-मूत्र होता है	नहीं होता है।
3.	वस्त्र पहने हुये मुक्ति सकती है	मुक्ति लिये नग्न होना अनिवार्य है।
4.	स्त्री को भी मुक्ति हो सकती है	नहीं हो सकती।
5.	गृहस्थ अवस्था में मुक्ति हो सकती है।	साधु होना अनिवार्य
6.	मरुदेवी को हाथी पर बैठे ही केवलज्ञान हुआ	असंभव
7.	भरत चक्रवर्ती को महल में ही केवलज्ञान हुआ	असंभव
8.	वस्त्र और आभूषण सहित प्रतिमा की पूजा	पूर्णतः दिगम्बर वीतराग प्रतिमा ही पूज्य
9.	मुनियों के पास वस्त्र आदि 14 उपकरण होते हैं	नग्न दिगम्बर रहते हैं।
10.	तीर्थंकर मल्लिनाथ स्त्री थे	स्त्री तीर्थंकर नही हो सकती।
11.	भगवान महावीर का गर्भ परिवर्तन हुआ.	असंभव
12.	महावीर का विवाह एवं कन्या का जन्म	विवाह नहीं हुआ।
13.	मुनियों का अनेक घरों से भिक्षा ग्रहण करना	एक दिन में एक ही बार आहार
14.	मुनि अनेक बार आहार लेते हैं।	एक ही स्थान पर खड़े-खड़े हाथ में आहार लेते हैं
15.	महावीर स्वामी की तेजो लेश्या थी	नहीं थी।
16.	ग्यारह अंगों का ज्ञान अभी है	अंग ज्ञान लुप्त हो गया है।

फायदा

पोरबन्दर के अब्दुल्ला और उनके भाई तैयबजी का मुकदमा दक्षिण अफ्रीका की कोर्ट में चल रहा था। उनकी वकालत में महात्मा गांधी को दक्षिण अफ्रीका जाना पड़ा। इस मुकदमे में महात्मा गांधी को फीस के रूप में 1 लाख रुपये मिलने वाले थे। किन्तु महात्मा गांधी ने उन दोनों भाईयों को समझाकर उनके बीच समझौता करवा दिया और एक लाख रुपये ठुकरा दिये। तब किसी मित्र ने कहा - मोहनदास ! तुमने अपना 1लाख का नुकसान कर लिया। तब गांधीजी ने कहा - दो भाईयों में झगड़ा मिट गया इससे बड़ा और क्या फायदा होगा ? अपने व्यक्तिगत लाभ के लिये किसी का घर बरबाद नहीं करना चाहिये।

क्रोध की दवा

एक सास-बहू की हमेशा लड़ाई होती रहती थी। दोनों को एक दूसरे का चेहरा देखकर बहुत क्रोध आता था। सास बहू परेशान थी और बहू सास से परेशान थी। एक दिन बहू ने सोचा कि मुझे क्रोध बहुत आता है उसका उपाय वैद्य के पास होना चाहिये। वे एक प्रसिद्ध वैद्य के पास पहुँची और उनसे कहा - वैद्यजी मुझे बहुत गुस्सा आता है। आप ऐसी कोई दवा बतायें जिससे मेरा गुस्सा समाप्त हो जाये। वैद्यजी ने उससे सारी समस्या पूछी और सारी बात समझ गया । उसने एक दवा की बोतल देते हुये कहा - देखो ! जब तुम्हें गुस्सा आये तो दो चम्मच दवाई मुंह में भर लेना और 15-20 मिनिट में मुंह की लार मिल जाये तो उसे पी जाना। बहू खुशी-खुशी घर आ गई। दूसरे दिन जब सास की किसी बात पर उसे गुस्सा आया तो उसने तुरन्त दवा अपने मुंह में भर ली। सास उसे मौन देखकर गालियाँ देने लगी परन्तु बहू मुंह में दवा भरकर चुपचाप खड़ी रही। थोड़ी देर बाद सास चली गई।

इस प्रकार उसने 5-6 बार यह प्रयोग किया। झगड़े के समय बहू को हमेशा मौन देखकर सास का गुस्सा भी कम होने लगा और लड़ाई समाप्त हो गई। परिवार में सुख शांति आ गई। बहू को भी शांति का अनुभव हो गया । वह वैद्य के पास धन्यवाद देने गई और पूछा कि आपकी दवाई में क्या था कि हमारे घर में शांति हो गई? वैद्य बोले - उस बोतल में दवा नहीं, पानी था। गुस्से के समय में थोड़ी देर मौन रहने से शांति बनी रहती है।

पापों का फल

उज्जयिनी नगरी पर राजा ब्रह्मदत्त राज्य करता था। यह राजा शिकार खेलने का बहुत शौकीन था। एक दिन वह शिकार खेलने जंगल गया तो वहाँ एक दिगम्बर मुनिराज ध्यान मुद्रा में बैठे दिखे। मुनिराज के प्रभाव के कारण उसे उस दिन एक भी शिकार नहीं मिला। दूसरे दिन भी ऐसा ही हुआ। यह देखकर राजा को बहुत क्रोध आया और तीसरे दिन उसने देखा कि मुनिराज आहार करने गये हैं तो कषाय के कारण मुनिराज की बैठने की शिला को आग से बहुत गर्म कर दिया।

मुनिराज आहार करके वापस और उसी शिला पर बैठ गये। शिला को इतना गर्म महसूस कर वे किसी के द्वारा किया गया उपसर्ग समझे और उन्होंने चारों प्रकार के आहार का त्यागकर वहीं पर अडिग होकर आत्मध्यान करने लगे।

गरम शिला के कारण मुनिराज का शरीर जल गया। मुनिराज ने अपनी अपूर्व आत्मसाधना के बल से आठों कर्मों को नाश किया और सिद्ध बन गये। इधर सात दिन बाद ही राजा ब्रह्मदत्त को मुनिराज को उपसर्ग करने के फल में भयंकर कुष्ठ रोग हो गया और वह भयंकर दर्द भोगता हुआ मर गया और सातवें नरक चला गया। यह है पापों का फल .....।

मुनि निन्दा फल

अयोध्या नगरी के राजा सुरत थे। उनकी पाँचसौ रानियाँ थीं। मुख्य रानी का नाम सती थी। वह राजा अपनी रानियों से बहुत प्रेम करता था। उसने एक सैनिक को आदेश दिया कि यदि कोई मुनिराज आयें तो मुझे सूचित करना अन्यथा नहीं। इधर दमधर और धर्मरुचि नाम के दो मुनिराज एक मास के उपवास के बाद नगर में पधारे। राजा को सूचना दी गई, उस समय राजा अपनी रानी सती के चेहरे पर तिलक लगा रहे थे। मुनिराज के आगमन का सन्देश सुनकर रानी से बोले- यह तिलक सूख नहीं पायेगा और मैं वापस आ जाऊँगा। रानी को मुनिराज को आगमन अच्छा नहीं लगा और मन ही मन मुनिराज का अपमान करने लगी।राजा मुनिराज की आहार चर्या कराके जल्दी-जल्दी कर वापस आ गया। परन्तु मुनिराज की निन्दा के फल में रानी सती को कुष्ठ रोग हो गया और उसका चेहरा बदसूरत हो गया, यह देखकर राजा को वैराग्य हो गया और राजा सुरत ने मुनि दीक्षा ले ली।

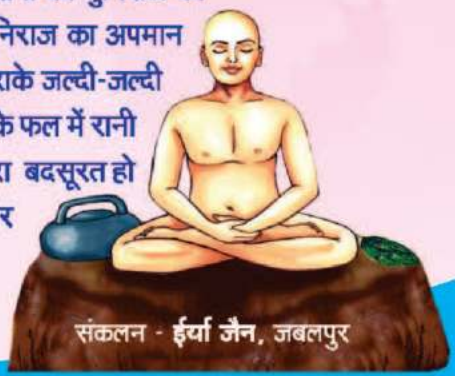

संकलन - ईर्या जैन, जबलपुर

अहिंसा की महान घोषणायें

भारत की आजादी के बाद जितनी हिंसा बढ़ गई है उतनी हिंसा कभी नहीं थी। आज पूरे देश में हजारों कत्लखानों में हजारों पशुओं को मारा जा रहा है। देखिये अहिंसा की ऐतिहासिक घोषणायें -

महाराणा राजसिंह का आज्ञापत्र -

1. प्राचीन काल से जैनियों के धर्म स्थानों को अधिकार मिला हुआ है, इस कारण कोई मनुष्य उनकी सीमा में जीव हत्या नहीं करे, यह उनका पुराना हक है।
2. जो जीव नर हो या मादा, वध करने के लिये छांट लिया गया हो, यदि जैनियों के स्थान से गुजर जाये तो वह अमर हो जाता है। उसको फिर कोई नहीं मार सकता। वह अपनी स्वाभाविक मौत ही मरेगा।
3. राजद्रोही, लुटेरे और जेलखाने से भागे हुये महाअपराधी को जो जैनियों के धर्मस्थान में शरण ले, उसे राजकर्मचारी नहीं पकडेंगे।
4. दान की हुई भूमि और अनेक नगरों में बनाई हुई जैनियों की संस्थायें कायम रहेंगी।

महाराणा जसवन्त सिंह का आज्ञापत्र -

जैनधर्म के पवित्र दिनों में अर्थात् दोज, पंचमी, अष्टमी, एकादशी, चतुर्दशी को तेल का कोल्हू, शराब की भट्ठी और अन्य हिंसक कार्य बन्द रहेंगे। नियम का उल्लंघन करने वाले को 250 रु. जुर्माना देय होगा।

महाराजा उदयसिंह का आज्ञापत्र -

31 अगस्त 1854 को महाराणा उदयसिंह ने राजाज्ञा पत्र निकाला था कि जैनियों के दशलक्षण पर्व अर्थात् भादों सुदी पंचमी से चौदस तक राज्य में हिंसा कार्य बन्द रहेगा।

बादशाह अकबर की घोषणा -

भादों के पर्यूषण पर्व के 12 दिनों में कोई भी जीव जैन बस्ती में न मारा जाये तो इससे दुनियां के मनुष्यों में उनकी बहुत प्रशंसा होगी। बहुत से जीव वध से होने बच जायेंगे और सरकार का यह कार्य है परमेश्वर को बहुत पसंद होगा। यह कार्य धर्म की आज्ञाओं के प्रतिकूल नहीं है। वरन उस शुभ कार्य के अनुरूप है, जिनका उपदेश इस्लाम ने दिया है। वा हुक्म बादशाह अकबर शाह गाजी। मित्ती जमादुलसानी सन् 992 हिजरी।

ऐसे थे पण्डित बनारसीदास जी

जैन कवि पण्डित बनारसीदासजी ने हिन्दी की सबसे पहली आत्मकथा अर्द्धकथानक लिखी। पण्डित बनारसीदास और महात्मा तुलसीदासजी में बहुत मित्रता थी। बादशाह शाहजहाँ पण्डित बनारसीदासजी के साथ शतरंज खेला करते थे। धीरे-धीरे पण्डित बनारसीदासजी जैन शास्त्रों को गहन अध्ययन हो गया और उन्होंने नियम लिया कि वे जिनेन्द्र भगवान को छोड़कर किसी के आगे सिर नहीं झुकायेंगे। उनका यह नियम शाहजहाँ का पता चला तो उन्होंने मजाक में उन्हें राजदरबार में बुलाया और मुख्यद्वार बन्द करवा दिया और उसका छोटा द्वार खुला रखा जिससे बनारसीदासजी झुककर ही आयें । चतुर बनारसीदास जब आये तो वे पहले द्वार पर बैठ गये और पहले पैर बाहर निकाले और फिर सिर। इस तरह वे बिना सिर झुकाये अन्दर पहुँच गये। इस चतुराई से बादशाह प्रसन्न होकर बोले - कविराज ! मांगो क्या चाहते हो ? इस समय जो मांगोगे वह निश्चित ही मिलेगा।

कवि ने कहा - जहाँपनाह ! मेरी इतनी इच्छा है कि आज के बाद फिर कभी दरबार में याद न बुलाया जाये। बादशाह वचनबद्ध होने के कारण बात मान ली परंतु बहुत दुःखी हुये और कई दिन तक दरबार में नहीं आये।

ऐसे थे हमारे पण्डित बनारसीदासजी।

प्रमाद से पतन

एक हजार वर्ष तक घोर तप कर कंडरिक मुनि ने शरीर को सुखा दिया। उनका तप देखकर देव भी उन्हें नमस्कार करते थे। एक बार मुनि के गृहस्थ अवस्था के भाई पुंडरिक ने आचार्य से कंडरिक को घर ले जाने की आज्ञा मांगी। गुरु ने प्रायश्चित सहित आहार लेने की आज्ञा दी और विहार कर गये। पुंडरिक ने जिनालय में कंडरिक को रखकर उत्तम रस का आहार देकर सेवा की। कुछ दिनों में मुनि स्वस्थ हो गये। परन्तु पौष्टिक आहार से मुनि प्रमादी हो गये और मरकर सातवें नरक चले गये।

धन्य हैं दीवान टोडरमलजी .....

अनेक जैन महापुरुषों ने आत्म कल्याण और जिनधर्म सेवा तो की है परन्तु सामाजिक दायित्वों के निर्वाह करने में भी वे अग्रणी रहे हैं। उनमें से एक थे दीवान टोडरमलजी।

पंजाब के पटियाला जिले का एक नगर है फतेहगढ़ साहिब। यह नगर सिक्खों के श्रद्धा और विश्वास का केन्द्र है। यहाँ अनेक गुरुद्वारे होने के कारण इस गुरुद्वारों का नगर भी कहा जाता है।

लगभग 300 वर्ष पहले सिक्खों के गुरु गोविन्द सिंह के दो बेटों को सरहिन्द के तत्कालीन फौजदार वजीर खान ने जीवित ही दीवार में चुनवा दिया था अर्थात् ऐसी सजा जिसमें जीवित व्यक्ति को दीवार से बांध दिया जाता था और उसके सामने दीवार खड़ी करवा दी जाती थी। कुछ समय में वह व्यक्ति सांस रुकने से तड़प-तड़पकर मर जाता था। दोनों बेटों की मृत्यु के बाद उनकी दादीमाँ का भी निधन हो गया। तब वहाँ का नवाब इन तीनों के शरीर का अंतिम संस्कार करने के लिये जगह नहीं दे रहा था। उसने एक शर्त रखी थी कि अंतिम संस्कार के लिये जितनी जगह चाहिये उतने हिस्से में स्वर्ण मुद्रायें बिछा दी जायें। यह सुनकर टोडरमलजी ने इसे अपना सामाजिक दायित्व समझा और अंतिम संस्कार जगह के बराबर स्वर्ण मुद्रायें बिछा दीं। यह देखकर नवाब का लोभ बढ़ गया और बोला जितनी जगह ऊपर की ओर चाहिये उतनी स्वर्ण मुद्रायें ऊपर की ओर भी खड़ी करके बिछाओ। टोडरमलजी ने उसकी बात मान ली और उतनी स्वर्ण मुद्रायें देकर भूमि ली और विधिवत अंतिम संस्कार किया। बाद में फतेहगढ़ साहिब में उसी स्थान पर गुरुद्वारा श्री ज्योति स्वरूप बनाया गया। टोडरमलजी के योगदान के कारण बेसमेन्ट का नाम दीवान टोडरमल जैन हॉल रखा गया है।

समीप में चंडीगढ़ रोड पर जैन मंदिर है। इस मंदिर में टोडरमलजी के ये दो चित्र लगे हुये हैं जिसमें इस घटना का उल्लेख किया गया है।

- प्रोफेसर डॉ. अनेकान्त कुमार जैन, दिल्ली

(गुरु गोविन्द सिंह यूनिवर्सिटी, पटियाला में एक अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार के अवसर पर यात्रा के दौरान प्राप्त तथ्य)

मेरी भावना

पिछले अंक से आगे

कोई बुरा कहो या अच्छा, लक्ष्मी आवे या जावे।
लाखों वर्षों तक जीऊँ या मृत्यु आज ही आ जावे।।
अथवा कोई कैसा ही भय या लालच देने आवे।
तो भी न्याय मार्ग से मेरा, कभी न पद डिगने पावे।।7।।

Whether People speak of me well or ill; Whether welth comes to me or departs; Whether I live be hundreds of thousands years old;
Or give up the ghost this day; Whether any one holds out holds out any kind of fear; Or with worldly riches be tempts me; My footsteps swerve not from the path of Truth!

होकर सुख में मग्न न फूलें, दुःख में कभी न घबरावें।
पर्वत नदी श्मशान भयानक, अटवी से नहीं भय खावे।।
रहे अडोल अकम्प निरन्तर, यह मन दृढ़तर बन जावे।
इष्ट- वियोग अनिष्ट योग में सहनशीलता दिखलावे।।8।।

Its pleasure may the mind be not puffed up; let pain disturb it never; May the awasome loneliness of a mountain, forest or river,
Or a burning place, never cause it a shiver. Unmoved, unshaskable, firmness may it grow adamantine, And display true moral strength when parted from the desired thing, or united with what is undesired!

सुखी रहें सब जीव जगत के, कोई कभी न घबरावे।
बैर-पाप अभिमान छोड़ जग, नित्य नये मंगल गावे।।
घर-घर चर्चा रहे धर्म की, दुष्कृत दुष्कर हो जावे।
ज्ञान चरित उन्नत कर अपना, मनुज जन्म फल सब पावै।।9।।

May happiness be the lot of all; May distress come near none; Giving up hatred, sin and pride; May the world pour forth one continuous eternal beam of delight; May Dharma become the main topic of conversation in every household; May evil cease to be easily - wrought; May incrase wisdom and merit of works, May men realize the purpose of human life Moksha!

अनुवादक - डॉ. महावीर जैन, जयपुर

संकलन - श्री सतीश जैन, जबलपुर

To be Countinude.....

प्लाट जितना होता है उतना बड़ा बंगला नहीं होता,
जितना बड़ा बंगला होता है, उतना बड़ा दरवाजा नहीं होता,
जितना बड़ा दरवाजा होता है, उतना बड़ा ताला नहीं होता,
जितना बड़ा ताला होता है, उतना बड़ी चाबी नहीं होती,
परन्तु चाबी का अधिकार पूरे बंगले पर होता है,
इसी तरह संसार के बन्धन और मुक्ति मन की चाबी पर ही निर्भर है।
धन के अभाव में 1 प्रतिशत लोग दुःखी हैं परन्तु समझ के अभाव में 99 लोग दुःखी हैं।
वस्तु स्वरूप विचार खुशी से सब दुःख संकट सहा करें।

इस योजना के अन्तर्गत
5000/- की राशि में 15 वर्ष की
सदस्यता प्रदान की जाती है।
जिसमें संस्था द्वारा पूर्व में तैयार
समस्त सीडी / साहित्य एवं
भविष्य में 15 वर्ष तक तैयार होने वाला
साहित्य/सीडी और चहकती चेतना
प्रदान की जाती है। इसमें
श्री गजकुमारजी चंकेश्वरा, पंढरपुर
श्री सुभाष मलूकचन्दजी गांधी, फलटण
श्री भूधरमल जैन, मुम्बई
द्वारा सदस्यता ग्रहण की गई।

सहयोग प्राप्त

5000/-
डॉ. रवीश जैन, सनावद द्वारा
बाल संस्कार शिविर में
सहयोग प्राप्त।

2500/-
ब्राह्मी और शौर्य
भूपेन शाह के जन्मदिवस पर
उनकी दादी श्रीमति दीपिकाबेन
प्रकाश भाई शाह की
ओर से प्राप्त।

2100/-
श्रीमति शैली डॉ. रवीश जैन
सनावद द्वारा आगामी
योजनाओं में प्राप्त।

- जीवन में विपत्ति का आना "पार्ट ऑफ लाइफ" है और विपत्ति में भी मुस्कराकर उससे बाहर निकलना "आर्ट ऑफ लाइफ" है।

दसवां बाल युवा संस्कार शिविर, भोपाल

सप्तम आवासीय जैनत्व बाल संस्कार शिविर, जबलपुर

शाश्वतधाम उदयपुर के कार्यक्रम में मंगलाचरण प्रस्तुत करती हुई बालिकायें

यंग जैन प्रोफेशनल्स, इंदौर के
युवा उत्सव 2016 की झलकियां